स्वर्ग तुम्हारे हृदय में है

मनुष्य अपने जीवन में स्वर्ग की कामना करता है। वह सोचता है कि हो सकता है मेरे मरने के बाद मुझे स्वर्ग मिले। लोग कहते हैं कि हम अच्छा काम करेंगे तो स्वर्ग जाएंगे और स्वर्ग में फिर आनंद ही आंनद मिलेगा। परंतु संत महापुरुषों ने कहा है कि स्वर्ग जीते–जागते संभव है। स्वर्ग भी यहां है, नरक भी यहां है। अगर अपना स्वर्ग इस जीवन में नहीं ढूंढ़ पाए तो उस स्वर्ग में क्या करोगे ? लोग अंध विश्वास में पड़ जाते हैं। इस जिन्दगी के अंदर तुमको एक मौका मिला है और तुम चर्चा करते हो कि इस जीवन से पहले क्या थे और इस जीवन के बाद तुम्हारा क्या होगा ? सचमुच में भाग्यशाली और बुद्धिमान वह है, जो अपना स्वर्ग यहीं बना ले।

स्वर्ग भी यहां है, नरक भी यहां है। जब जान लिया उस चीज को जो हमारे अंदर है तो स्वर्ग पहुंच जाओगे और जब नहीं जाना तो नरक में पड़े रहोगे। सबसे बड़ा नरक तो हुआ कि स्वर्ग में रहते हुए भी पता नहीं है कि स्वर्ग में हैं। एक वह गरीब होता है, जिसके पास पैसा नहीं है और एक वह गरीब होता है जिसके घर के नीचे अरबों की सम्पत्ति है और फिर भी वह गरीब है। वह है असली गरीब। एक तो वह भूला–भटका होता है जिसे नहीं मालूम है कि उसकी मंजिल कहां है। एक भूला–भटका वह होता है जो मंजिल पर पहुंच तो गया, फिर भी उसको नहीं मालूम है, कि वह कहां भटक रहा है। मनुष्य के साथ भी यही बात है। जिस खजाने के साथ उसका जन्म हुआ और मृत्यु तक वह खजाना अंदर रहेगा, परंतु उस आदमी को नहीं मालूम है फिर भी भटकता रहता है, फिर भी खोया रहता है, फिर भी और बातों में लगा रहता है। जिस स्वर्ग की तुमको तलाश है, वह तुम्हारे हदय में है।

महाराजी